सामाजिक स्तरीकरण व शिक्षा
(SOCIAL STRATIFICATION AND EDUCATION)

मनुष्य के सामाजिक जीवन को सुचारू रूप से क्रियान्वित करने के लिए व उसके दिन प्रतिदिन के विभिन्न कार्यों के सन्तोषजनक प्रतिपादन हेतु प्रत्येक व्यक्ति को एक निश्चित भूमिका दे दी जाती हैं व इस आधार पर उसे कुछ समूहों का उपसमूहों में विभक्त कर दिया जाता है। समाज के अन्तर्गत कुछ समूहों के विभिन्न स्तरों को उपसमूहों में बाँट देने की प्रक्रिया को सामाजिक स्तरीकरण (Social stratification) कहते हैं। भारतीय समाज में इस स्तरीकरण का मूलआधार जाति व वर्ग है। परम्परागत समाजों में यह स्तरीकरण की व्यवस्था जन्म से निर्धारित होने वाली जाति व्यवस्था पर आधारित होती है तो विकसित औद्योगक समाजों में इसका आधार सामाजिक वर्ग होते हैं। प्राचीन भारतीय समाज में वर्ण व्यवस्था (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) जाति के आधार पर होने वाला विभेद सामाजिक स्तरीकरण का ही उदाहरण है, जिसमें जन्म लेते ही व्यक्ति का समाज में एक स्थान, उसके कर्त्तव्य तथा अधिकार निर्धारित हो जाते थे परन्तु आधुनिक समाजों में स्तरीकरण का आधार व्यक्ति की सामाजिक स्थिति होती है। एक ही सामाजिक प्रस्थिति के व्यक्ति एक ही वर्ग के माने जाते हैं चाहे वे किसी भी जाति के क्यों न हों। इन सामाजिक वर्गों का निर्माण उसी समय शुरू हो जाता है जब समाज के अन्तर्गत पाये जाने वाले समूह एक-दूसरे से उच्च तथा निम्न माने जाने लगते हैं। सामाजिक वर्गों के निर्माण की यह प्रक्रिया स्तरीकरण कहलाती है।

स्तरीकरण की यह व्यवस्था विभिन्न समाजों में विभिन्न होती है। कुछ में यह बहुत दृढ़ होती है जबकि दूसरों में नग्य होती है। उदाहरणार्थ, भारतीय समाज में जाति एक बहुत कठोर स्तरण है। समाज का प्रत्येक सदस्य एक वर्ग में उत्पन्न होता है जिसे जाति कहते हैं। वह अपनी जाति को कभी भी बदल नहीं सकता। उसका विवाह जाति के बन्धनें के अन्दर ही होता है और एक बड़ी सीमा तक उसकी आजीविका का निर्णय भी जाति के अनुसार लिया जाता है। परन्तु कुछ सामाजों में स्तरण की संरचना अस्पष्ट व परिवर्तनशील होने में व्यक्ति की आजीविका या उसका सामाजिक स्तर या उसके जीवन साथी का चुनाव उसके किसी विशेष वर्ग या समाज के स्तरण पर निर्भर नहीं करता। इस प्रकार समाज में व्याप्त इन दो प्रकार की व्यवस्थाओं में सामाजिक स्तरण या तो आरोपित (Ascrited) होता है या प्राप्त (Achieved) होता है स्पष्टतः जब सामाजिक स्थान या स्तरण आरोपित होता है तो स्तरीकरण का विभाजन अटूट होता है। जब यह सामाजिक स्थान प्राप्त होता है तो यह व्यवस्था कुछ लचीली होने के कारण विभिन्न स्तरों के बीच को सामाजिक गतिशीलता सम्भव होती है। उदाहरणार्थ—**अमेरिका की वर्ग व्यवस्था प्राप्त स्तरण** (Achieved stratification) व भारत की जाति प्रणाली आरोपित स्तरण (Ascribed stratification) कहलाती है। सामाजिक स्तरीकरण का निम्न रूप से परिभाषित किया जा सकता है—

गिस्बर्ट के अनुसार, "सामाजिक स्तरण उच्च और निम्न सम्बन्ध से एक-दूसरे के साथ जुड़े हुए समाज के स्थायी समूहों या श्रेणियों का विभाजन है।"

"Social Stratification is the division of society in permanent groups or categories linked with each other by the relationship of superiority and sub-ordination."

—Gisbert

मुरे के अनुसार, "समाज का उच्च और निम्न इकाइयों में शैक्षिक विभाजन स्तरीकरण है।"

"Stratification is a horizontal division of society into higher and lower special units."

—Muray

सदरलैण्ड और **वुडवार्ड** के अनुसार, "स्तरीकरण विभेदीकरण की एक सरल प्रक्रिया है, जिसके द्वारा कुछ लोग अन्य की तुलना में ऊँची श्रेणी के होते हैं।"

"Stratification is simply a process of differentiation where by some people come to higher rank, than others."

—**Sutherland and Woodward**

यंग व **अन्य** के अनुसार, "अधिकांश समाजों में व्यक्ति स्वयं को कुछ वर्गों में वर्गीकृत कर लेते हैं। ऐसे वर्गों को परिभाषित करने की प्रक्रिया को सामाजिक स्तरीकरण कहते हैं।"

"In most socities people classify one another into categories and rank these categories from higher to lower. The process of defining such categories is called Social stratification, and the resulting set of ranked categories is called stratification structure."

—**Young and Others**

सामाजिक स्तरीकरण की आवश्यकता (Need of Social Stratification)—प्रत्येक समाज में किसी न किसी प्रकार का सामाजिक स्तर या वर्गीकरण (Stratifiation) पाया जाता है। ऐसे प्रत्येक वर्ग को strates या class कहा जाता है। ये वर्ग समाज में असमानता उत्पन्न करते हैं और यही सामाजिक असमानता सामाजिक स्तरीकरण का आधार है। सभी समाज कम या अधिक रूप में सामाजिक असमानता को सदस्यों के स्तरीकरण द्वारा प्रोत्साहित करते हैं व इसे समाज की व्यावहारिक आवश्यकत बताते हैं। उनके विचार में समाज में उच्चस्तरीय कार्यों का आबंटन उच्च वर्ग को किया जाता है तथा निम्न स्तर का कार्य निम्न वर्ग के लोगों को आवंटित किया जाता है क्योंकि वे बौद्धिक दृष्टि से अधिक क्षमता वाले माने जाते हैं। किन्तु जब यह वर्गीकरण जन्मजात हो जाता है तो उसमें कठोरता (rigidityas) आ जाती है तथा निम्न वर्ग के लोगों का सामाजिक विकास रूक जाता है तथा ऐसे समाज 'बन्द समाज' की श्रेणी में आ जाते हैं। इसके विपरीत वे समाज जिनमें वर्गीकरण की कठोरता नहीं होती व योग्यता के आधार पर व्यक्ति का सामाजिक विकास सम्भव होता है, उन्मुक्त या खुले समाज कहलाते हैं। भारत में भी ऐसे समाज के निर्माण में शिक्षा की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती जा रही हैं।

सामाजिक स्तरीकरण के आधार (BASIS OF SOCIAL STRATIFICATION)

सामाजिक स्तरीकरण के कई आधार है जैसे—जाति, आयु, लिंग, व्यवसाय, कुशलता योग्यता पद एवं आर्थिक स्थिति आदि। प्रत्येक समाज में इन्हीं में से कुछ आधारों पर स्तरों का निर्धारण होता है। सामाजिक स्तरीकरण के ये प्रमुख आधार निम्न हैं—

(1) प्राय: बन्द समाजें में **आयु** को सामाजिक स्तरीकरण का मुख्य आधार माना जाता है तथा इसी कारण युवकों की अपेक्षा प्रौढ़ व वृद्ध व्यक्तियों को उच्च स्थान दिया जाता है।

(2) **लिंग** के आधार पर भी सामाजिक स्तरीकरण प्राय: पितृसत्तात्मक व मातृसत्तात्मक परिवारों में 'पुरुष' व 'स्त्री' वर्ग की प्रधानता के रूप में देख जाता है।

(3) **जाति** के आधार पर भी सामाजिक स्तरीकरण का निर्धारण प्राय: जन्म से ही निश्चित हो जाता है। भारतीय समाज पहले चार वर्णों में बँटा था। ब्राह्मण, वैश्य, क्षत्रिय एवं शूद्र। समाज में ब्राह्मणों को सर्वोच्च स्थान तथा शूद्रों को निम्नतम स्थान प्राप्त था।

(4) व्यक्ति की **शारीरिक तथा बौद्धिक योग्यता** भी उसके सामाजिक स्तरीकरण का निर्धारण करती है। यह योग्यत व्यक्ति को उपयुक्त व्यवसाय के चयन में भी सहायता देती है।

(5) समाज में भिन्न-भिन्न व्यवसायों की भिन्न-भिन्न प्रतिष्ठा होती है तथा प्रत्येक व्यवसाय के लिए आवश्यक योग्यता भी भिन्न-भिन्न होती है। खुले समाजों में प्राय: सामाजिक स्तरीकरण व सामाजिक गतिशीलता का प्रमुख कारक व्यवसाय ही है। इसी कारण व्यक्ति अपनी योग्यता व कुशलता में वृद्धि करके समाज में ऊँचा स्तर पाने की कोशिश करता है।

(6) व्यक्ति की **आर्थिक स्थिति** भी उसके सामाजिक स्तरीकरण का निर्धारक है। यदि व्यक्ति बहुत शिक्षित व योग्य है तथा प्रतिष्ठित पद पर भी आसीन है परन्तु वह आर्थिक रूप से सम्पन्न नहीं है तो उसका सामाजिक स्तरीकरण निम्न ही रहता है।

(7) संसार में जिस व्यक्ति के पास **जितनी अधिक शक्तियाँ** निहित होती हैं वह उतना ही प्रतिष्ठित समझा जाता है। कुछ पद स्वयं में इतने शक्तिशाली होते हैं कि उन पर बैठते ही व्यक्ति उच्च स्तर प्राप्त कर लेता है चाहे फिर उसकी जाति, आयु, लिंग, धन सम्पत्ति शिक्षा तथा कुशलता निम्न स्तर की ही क्यों न हो।

(8) सामाजिक स्तरीकरण का सबसे मुख्य कारक है—**शिक्षा** है। प्रत्येक समाज में, शिक्षित व्यक्तियों को अशिक्षित व्यक्तियों की अपेक्षा ऊँचा स्तर प्रदान किया जाता है उच्च शिक्षा प्राप्त व्यक्ति निम्नवर्गीय परिवार से सम्बन्धित होने पर भी समाज में उच्च स्तर का माना जाता है। अत: शिक्षा का सामाजिक स्तरीकरण का मुख्य आधार माना गया है जिसे प्राप्त कर व्यक्ति स्वयं को किसी भी ऊँचाई तक ले जा सकता है।

शिक्षा तथा सामाजिक स्तरीकरण (EDUCATION AND SOCIAL STRATIFICATION)

प्राय: भारतीय समाज में सामाजिक स्तरण उपरोक्त तीन प्रकारों के अतिरिक्त लिंग भेद के आधार पर भी देखते को मिलता है। माना गया है जिस प्राप्त कर व्यक्ति स्वयं का किसी भी ऊँचाई तक ले जा सकता है। चारों प्रकार के स्तरीकरण समाज में व्यक्ति की आरोपित स्थिति (Ascribed status) के कारण है। व्यक्ति अपनी ही जाति तथा धर्म में उत्पन्न होता है। उसका लिंग भी उसके जन्म के साथ ही निर्धारित हो जाता है। भारतीय समाज में आर्थिक वर्ग विभेद भी बहुत कुछ उसके किस जाति या परिवार में उसने जन्म लिया है, इस पर ही निर्भर हो जाता है। परन्तु इस स्तरीकरण में अब परिवर्तन आ रहा है। पहले जाति के अनुसार ही व्यवसाय का चुनाव होता है। एक शूद्र के पुत्र को वही व्यवसाय अपनाना होता था जो उसके पूर्वज करते चले आते थे। इसी प्रकार वैश्य का पुत्र वाणिज्य व्यापार में ही लग जाता था। आज स्थिति में परिवर्तन के बाद था शूद्रों को ऊपर उठने के कम अवसर मिलते हैं। आज से विधान के प्रावधानों के अनुसार सभी व्यक्तियों को जाति, लिंग, धर्म, भाषा, क्षेत्र आदि के भेदभाव के बिना शिक्षा के समान अवसर उपलब्ध हो जाने से कोई भी व्यक्ति शिक्षा प्राप्त कर अपनी

योग्यता व क्षमता के आधार पर समाज में उच्च स्थान प्राप्त कर सकता है। अतः यह शिक्षा ही है जो व्यक्तियों के दृष्टिकोण में परिवर्तन ला रही हैं तथा जाति पाँति के बन्धनों को काटकर स्तरीकरण के दुष्प्रभावों को भी कम कर रही हैं। परन्तु इस सन्दर्भ में भी यदि शिक्षा का आधार जनतान्त्रिक होता है जहाँ प्रत्येक व्यक्ति को स्वतन्त्रता एवं विकास के समान अवसर जहाँ प्रत्येक व्यक्ति को मिलते हैं तभी यह शिक्षा स्तरीकरण को कम कर पाती हैं अन्यथा जहाँ यह आधार वही होता वहाँ तो स्तरीकरण को और अधिक बढ़ावा ही मिलता है क्योंकि उच्च वर्ग के बच्चे कितनी भी महँगी शिक्षा होने पर भी अपनी कार्य के अनुसार शिक्षा प्राप्त कर लेते हैं परन्तु निम्न वर्ग के बच्चे वहीं शिक्षा प्राप्त कर पाते हैं जिनकी फीस वह वहन कर सकते हैं फिर चाहे वह उसकी रुचि की हो या नहीं। इसी प्रकार उच्च वर्ग का बालक कम बौद्धिक योग्यता रखते हुए भी निम्न वर्ग के उच्च बौद्धिक क्षमता वाले बालक से अधिक शिक्षा प्राप्त कर लेता है। इसी प्रकार निम्न वर्ग का बालक शैक्षिक सुविधाओं की कमी के कारण अपनी योग्यता का पूरा विकास नहीं कर पाता है।

अतः यदि समाज में व्याप्त जातीय, धार्मिक आर्थिक एवं लिंग भेद सम्बन्धी स्तरीकरण को कम करना है तो शिक्षा प्राप्त करने के समान अवसर सबको मिलने चाहिए और शिक्षा प्रणाली संगठित करनी चाहिए जो स्तरीकरण में कमी लाने की क्षमता प्रदान करने की ओर सक्रिय हो। इस दिशा में शिक्षा का सार्वभौमीकरण, शैक्षिक अवसरों की समानता व सर्वशिक्षा अभियान जैसे उपाय कारगर सिद्ध हो सकते हैं। संक्षेप में, शिक्षा का प्रसार इस प्रकार हो कि समाज में व्यक्ति को उसकी जाति व धर्म के नाम पर नही वरन् उसकी योग्यता एवं कुशलता के आधार पर शिक्षा प्रतिष्ठा व सम्मान मिले तभी सामाजिक स्तरीकरण के कुष्प्रभाव में कमी लाई जा सकती है।

निम्नवर्गीय व शिक्षा (Plebianisation And Education)

इस topic को (marginalized children या Group) के सम्बन्ध में जो Notes दिए गए हैं, वही इसमें भी पढ़नी है।